ISSN : 2347-7660 (Print) | ISSN : 2454-1818 (Online)

रवीन्द्र कालिया की कहानियों में सामाजिक विडंबना

शिखा उमराव ,

शोध छात्रा,
ज्वाला देवी विद्या मन्दिर पी.जी. कॉलेज, कानपुर

व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्ति के अभाव में समाज की स्थापना या कल्पना करना अत्यन्त असम्भव कार्य है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यवहार व विचार होते है यही व्यवहार और विचार मानव को मानव से भिन्न करता है। व्यक्तियो के व्यवहार आदान–प्रदान से ही समाज निर्मित होता है अर्थात समाज व्यक्तिगत समूह है। रवीन्द्र कलिया वस्तुतः अकहानी आन्दोलन से जुड़े एक सषक्त कहानीकार है। रवीन्द्र कालिया ने खुद को ऐसे समाज में पाया जहाँ का वातावरण मुख्यतः सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक परिवर्तन, राजनीतिक एवं मानव के व्यवहार तक में बदलाव की सीमा पार कर चुकी है। जिसे हम इन स्थितियो को सामाजिक विडंबना कहकर परिभाषित कर सकते है। आजादी के बाद देष में आधुनिकीकरण के तहत शहरीकरण और यंत्रीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। बड़े शहरो के विकाष में उन्हें अपना कार्य चुनना पड़ा। रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ महानगर की वास्तविकता से जुड़ी है। किस तरह व्यक्ति गॉव से शहर की ओर पलायन करते है और उन्हे किस–किस तरह की यहाँ समस्याओ का सामना करना पड़ता है यही सामाजिक विडंबना है।

'बड़े शहर का आदमी' कहानी का नायक पी.के. अपनी जेब में सुसाइट नोट लेकर घूमता है क्योंकि वह महानगरीय जीवन की विडंबनाओं में बहुत ही बुरी तरह से फंस चुका है। वह शहर आता है यह सोचकर कि वह शहर में अपनी पहचान बनायेगा परन्तु वह अपनी पहचान ही भूल चुका है।

आधुनिक कहानियो में वस्तुतः महानगरीय, मध्यवर्ग, स्त्री–पुरूष के बदलते रिष्ते, नारी का समाज में स्थान, आर्थिक व राजनीतिक समस्याओ को ही केन्द्र बनाकर कहानियाँ लिखी गयी है। इन कहानीयो में राजेन्द्र यादव, मंजू भण्डारी, कमलेष्वर, गंगा प्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, मोहन राकेष, मदन वत्सायन अभिमन्यू अनंत आदि आते है।

रवीन्द्र कालिया की कहानी 'नौ साल छोटी पत्नी' एक भावप्रधान कहानी है। मे पती को यह पता चल जाता है कि उसकी पत्नी का विवाह के पहले किसी से प्रेम संबंध थे। यह जानते हुये भी पती पत्नी से कुछ नही बोलता चुपचाप उसका यह राज अपने जहन में दबाये रहता है और कही न कही दु:ख को आमन्त्रित करता है।

'काला रजिस्टर' कालिया जी की महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इस कहानी में दफ्तर में किस तरह भृष्टाचार फैल चुका है यह दर्षाया गया है। इसके सभी पात्र एक ही पीढ़ी के है परन्तु सत्ता के प्रतीक के खिलाफ संघर्ष में कोई भी किसी का साथ देने को नही तैयार है। यह सामाजिक विडंबना ही है जो समाज में रहते हुये भी मानव एक दूसरे के काम नही आता।

'चैकेया नीम' कहानी के अन्तर्गत कहानीकार ने राजनेताओ का असली रूप खोलने का प्रयास करने की पूर्ण कोषिष की है। इलेक्षन/चुनाव का जब समय आता है तब गॉव, शहर, प्रत्येक क्षेत्र को इस तरह से सजाया जाता है जैसे कि नयी नवेली दुल्हन को उसके विवाह

के उपरान्त सजाया जाता है। लेकिन जैसे ही यह इलेक्षन का समय समाप्त होता है वैसे ही गॉव अपनी पूर्णतः गन्दगी को लिये फिर अपनी पुरानी समस्याओं से ग्रसित हो जाता है। रवीन्द्र जी ने राजनीतिक समस्याओ की विडंबनाओ पर बहुत गहरी चोट करते दिखायी देते है। बेरोजगारी को उन्होनें 'चाल' कहानी के अर्न्तगत दिखाने का प्रयास किया है। प्रकाष और किरण एक निम्न–मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित है। प्रकाष ने उच्च षिक्षा प्राप्त कर लिया है इसके बावजूद भी वह बेरोजगारी की मार झेल रहा है। यह समाज की सबसे बड़ी विडंबना बनी हुयी है। आज का युवा पीढ़ी इसकी मार को बाखूबी झेल व सह रहा है।

'नौ साल छोटी पत्नी' एक भावप्रधान कहानी है। यह कहानी अनमोल विवाह की ओर इंगित करती है। इस कहानी का नायक कुषल नामक एक युवक है जिसका विवाह तृप्ता नाम की एक लड़की से हो जाता है जो कुषल से नौ साल छोटी है। कुषल तृप्ता के आषिक के बारे में जानता है परन्तु उसे यह एहसास नही होने देता है और यह राज अपने अन्दर ही सीमित रखता है। तृप्ता रोज अपने प्रेमी का पत्र पढ़ती है पूछँने पर बोल देती है कि कुछ लिख रही हूँ। कालिया जी ने अपनी इस कहानी में दोनो के अन्तर मनः की स्थिति कों आकने की पूरी कोषिष की है रवीन्द्र कालिया की कहानियां वर्तमान में चिंतित समाज की आइना जैसी लगती है। उनकी प्रत्येक कहानियो में। वर्तमान की परिदृष्य को देख सकते है। 'नौ साल छोटी पत्नी' में लेखक ने पति और पत्नी दोनो की समस्याओ को समझने का भरसक प्रयास किया है। जब कोई लेखक कहानी लिखता है तभी वह समम लेता है कि उसका निस्कर्ष क्या होगा।

कहानी समकालीन साहित्य की सर्वाधिक प्रयोगषील और विष्वसनीय विद्या है। संभवतः साहित्य की सबसे प्राचीन व नैसर्गिक विद्या भी है। प्रत्येक युग की परिस्थितियों के अनुकूल कथा रूपो का निर्माण और बर्ताव कहानी के रूप में सामने आता है। मनुष्य के आव, भाव, विचारो और स्थापनाओ को प्रकट करने में सहायक होती है कहानी। कालिया जी ने भी अपनी आव, भाव व विचार शैली को कहानियो के द्वारा ही स्पष्ट करने करने का सफल प्रयास किया है। उनकी प्रत्येक कहानियो में उन्ही के द्वारा सही गयी समस्याओ को उद्घाटित किया है। कहानी साहित्य जगत में कहानी सर्वाधिक बरती जाने वाली विद्या है। कथा कहने की अन्य विधाओ के बजाय कहानी से पाठक और अन्य विधाओ के बजाय कहानी से लेखक और दोनो की अधिक आत्मीयता है। आधुनिक कहानी के पाठक अपने मानस पटल में इस विधा को बाखूबी से विष्वासजगत मे ले जाते है। आज आधुनिकता को केवल देष–विदेष की भौगोलिक परिसीमाओं में नही बॉधा जा सकता है

हिन्दी कहानी की वर्तमान विविधता भी इसका सबल प्रमाण है। सब लेखकों के अपने अनुभव–क्षेत्र है। और उन्ही की प्रामाणिक अभिव्यक्ति उन लेखको ने की है। मानसिक दिवास्वपनो में डूब जाने की जगह क्या यह ज्यादा सही और उपयुक्त है। मनुष्य अपने आज की भयावहता, त्रास और संघर्ष को झेले। नई कहानी शुरू से ही प्रगतिचेतना लेखकों और प्रगतिषील मूल्यों की संषिलष्ट इकाई–मनुष्य की वाणी रही है। रवीन्द्र जी की कहानियॉ इन सभी विषेषताओ को पूरा करती है।

रवीन्द्र कालिया की प्रारंभिक कहानियो में आई प्रयोगषीलता को साफ तौर पर रेखांकित किया गया है। 'सत्ताईस साल की उम्र तक' कहानी, 'क, ख, ग' 'कोजी कार्नर' मे अ कहानी का स्वर सुनायी देता है। इस पीढ़ी के युवाओ में इन सारे मूल्यो–सिद्धान्तो के खिलाफ न केवल प्रतिकार का भाव बल्कि एक गहरा असंतोष भी दिखाई देता है वह इन समस्याओ से बाहर

निकलना चाहते है परन्तु निकलने में उतनी ही कठिनाइयो का सामना भी करते है। ऐसे मे बेरोजगारी, निराषा और गहरे असंतोष के लाये मे जी रहे इन युवाओ के मन मे क्षुब्ध युवा मन की आवाज को बखूबी सुना जा सकता है। रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ वस्तुतः बहुपाक्षिक यथार्थ षिल्प की गुत्थी में फँसी हुई है। जो गम्भीर बातो को भी हल्के तरीके से व्यक्त करने में सफल होते दिखाई देते है। यही इनकी प्रमुख विषेषता है। इनकी कहानियो में नायक नायिकाओ में प्रतिनायक सभी एक झंझावती जीवन संघर्ष से जूझ रहे है लगातार और अहर्निष एक तरह की परिस्थितियो में पड़े रहने की अभिव्यक्ति है।

निम्न मध्यवर्गीय जीवन को कालिया जी ने व्यापक फलक पर अंकित करने का सफल प्रयास सराहनीय है। ऊर्जा बोध के बावजूद सफेद पोषी की विवषता, पारिवारिक ढॉचे की चरमराहट कैसे भी परिवर्तन की अपेक्षा यथास्थिति और सुरक्षा की चाह बड़े शहरो में जगह की तनाव और पीढ़ियो की सोच का अंतराल इनकी कहानियो का मुख्य विषय रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मधुरेष, हिन्दी कहानी का विकास, 2018, पृष्ठ संख्या – 30
- हिन्दी कहानियॉ एक आलोचनात्मक अध्ययन, डॉ श्री कृष्णलाल (पृष्ठ–33)
- प्रतिनिधि कहानियाँ, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाषन, नयी दिल्ली, 1984 (पृष्ठ–80)
- सिंह नामवर, कहानी नयी कहानी, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद सं. –2012 (पृष्ठ–110)
- आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम, वर्णा प्रकाषन, नई दिल्ली, 2002 (पृष्ठ –109)
- कमलेष्वर, नयी कहानी की भूमिका, 2015 राजकमल प्रकाषन, (पृष्ठ सं. –80–87)
- हिन्दी कहानी : पहचान और परख, (पृष्ठ –27)
- समकालीन कहानी दिषा और दृष्टि, धनंजय, अभिव्यक्ति प्रकाषन, इलाहाबाद 1970 (पृष्ठ – 100–110)